आईआईएम के आठवें दीक्षांत में 180 स्टूडेंट्स को डिग्री और 4 को बांटे गए गोल्ड मेडल, 4 रिसर्चर्स को मिली पीएचडी की उपाधि

ट्राई के चेयरमैन डॉ. रामसेवक शर्मा ने अपनी स्टोरी से स्टूडेंट्स को किया मोटिवेट

कंप्यूटर साइंस पढ़ने मैंने 45 की उम्र में जॉब से लिया ब्रेक, आप तो यंग हो वही करो जो चाहते हो: डॉ. शर्मा

सिटी रिपोर्टर | रायपुर

आईआईएम का आठवां दीक्षांत समारोह गुरुवार को नया रायपुर स्थित कैंपस में रखा गया। पहली बार नए कैंपस में रखे गए समारोह में बतौर चीफ गेस्ट टेलीकॉम रेगुलेटरी अथॉरिटी ऑफ इंडिया (ट्राई) के चेयरमैन डॉ. आरएस शर्मा मौजूद रहे। समारोह में 2016-18 बैच के 54 और 2017-19 बैच के 179 स्टूडेंट्स यानी कुल 233 स्टूडेंट्स को डिग्रियां और 8 रिसर्चर्स को पीएचडी की उपाधि बांटी जानीं थीं। लेकिन 176 स्टूडेंट्स ही डिग्री लेने पहुंचे। वहीं, चार रिसर्चर्स ने मंच से पीएचडी की उपाधि ली। ट्राई के प्रमुख डॉ. शर्मा मंच पर अपनी बात रखते हुए बोले - गुड ऑफ्टरनून फ्रेंड्स। मुझे गर्व महसूस हो रहा है कि यहां मैं इतने यंग और इंटेलिजेंट लोगों के सामने खड़ा हूं। आप देश के फ्यूचर हैं। आपके पास इतिहास और सोशल स्ट्रक्चर बदलने का मौका है। आपको किस्सा सुनाता हूं। मुझे कम्प्यूटर साइंस में मास्टर की पढ़ाई करनी थी। इसके लिए मैंने 45 साल की उम्र में जॉब से ब्रेक लिया, तब जॉइंट सेक्रेटरी था। अच्छी लाइफ जी रहा था, लेकिन पढ़ाई करने यूएस गया। वहां सारे स्टूडेंट्स में मैं सबसे बड़ा था। सभी मेरे बच्चे समान थे। जब मैंने जॉब से ब्रेक लिया तो लोग कहते थे ऐसा मत करो। मैं एक ही बात कहता कि रामचरित मानस की स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा। यानी तुलसीदास ने भी अपने सुख के लिए रघुनाथ की गाथा लिखी थी। मैंने भी वो किया जो करना चाहता था। नई लाइफस्टाइल के लिए स्ट्रगल किया। अच्छी ग्रेड के साथ पास हुआ। मास्टर पूरा होने के बाद लोगों ने विदेश में काम करने की सलाह दी। मैंने तय किया कि देश वापस जाऊंगा। वापस आया। इसी बीच गवर्नमेंट ने आधार पर काम शुरू किया और 2009 में मुझे यूआईडीएआई का डायरेक्टर जनरल नियुक्त किया गया। आप सभी यंग हैं मैं श्योर हूं कि आपने कुछ न कुछ प्लान किया होगा। आपको जिंदगी में आगे बढ़ने के कई मौके मिलेंगे। जिंदगी हमेशा सफल होने के मौके देती हैं। उन्होंने बताया इंडिया पहली कंट्री है जो बायोमेट्रिक टेक्नोलॉजी यूज कर रही है और जिसकी 99.97 प्रतिशत एक्यूरेसी है। आप स्टूडेंट्स भी अपने आप पर ट्रस्ट करें। विश्वास करें आप सब कर पाएंगे।

चार को मिला गोल्ड मेडल: इससे पहले समारोह में अतिथियों ने इंस्टीट्यूट के बेस्ट स्टूडेंट्स को मेडल से सम्मानित किया। सत्र 2017-19 में ओवरऑल बेस्ट परफॉर्मेंस के लिए सिल्वेस्टर सैमुअल जे को गोल्ड मेडल से नवाजा गया। सबसे ज्यादा सीजीपीए हासिल करने वाले टॉप 3 स्टूडेंट्स राही जैन, बुसीरेड्डी नंदिनी और शैलजा तिवारी को भी मेडल से सम्मानित किया गया। ये चारों स्टूडेंट्स पहले इंजीनियरिंग कर चुके हैं। कार्यक्रम में आईआईएम के डायरेक्टर डॉ भारत भास्कर, बोर्ड ऑफ गवर्नेंस की प्रेसीडेंट श्यामला गोपीनाथ, जागरूक दावड़ा सहित अन्य मौजूद रहे।

आंध्रप्रदेश की नंदिनी बोलीं- लोग कहते थे कि छत्तीसगढ़ माओवादी एरिया है मत जाओ, मैंने अपने दिल की सुनी, जीता गोल्ड मेडल

नंदिनी को डिग्री देते डॉ. भारत भास्कर (बाएं से), डॉ. आरएस शर्मा और श्यामला गोपीनाथ।

आंध्रप्रदेश की बुसीरेड्डी नंदिनी सेकंड हाईएस्ट सीजीपीए होल्डर रहीं। उन्हें डायरेक्टर मेडल से नवाजा गया। सिटी भास्कर से खास बातचीत में नंदिनी ने बताया कि आईआईएम रायपुर में एडमिशन की जब बात आई तो कई परिचितों ने ये कहा कि छत्तीसगढ़ तो माओवादी एरिया है। वहां जाकर पढ़ना सही नहीं होगा। वहां मत जाओ। लेकिन मैं आ गई क्योंकि मेरे परिवार को ऐसा नहीं लगता था। यहां आने के बाद रियलाइज हुआ कि मेरा डिसीजन सही था। यहां सब अच्छा है। स्टडी के दौरान मैंने पार्टीज में भी पार्टिसिपेट किया, लेकिन कभी पढ़ाई के साथ कम्प्रोमाइज नहीं किया।

प्रोफेसर्स से बात कर हर डाउट कर लेता था क्लीयर, मिली सक्सेस

सबसे ज्यादा सीजीपीए हासिल करने वाले राही जैन को चेयरपर्सन गोल्ड मेडल से नवाजा गया। मध्यप्रदेश, खंडवा के राही ने फिलहाल एक बैंक में जॉब कर रहे हैं। पढ़ाई के बारे में उन्होंने बताया कि इंस्टीट्यूट का सिलेबस अपने स्ट्रेटजी की तरह है। कोई भी डाउट होता तो प्रोफेसर्स से बात कर क्लीयर कर लेता। सभी प्रोफेसर्स ने हमेशा सपोर्ट किया जिसके कारण ही अच्छे मार्क्स लाकर मेडल हासिल कर सका।

घूमने-फिरने के बजाय क्लास में दिया समय, मिला मेडल

पीजीडी चेयरपर्सन मेडल हासिल करने वाली शैलजा तिवारी ने बताया कि मैंने रेगुलर स्टडी पर फोकस किया। घूमने के बजाय ज्यादा से ज्यादा समय क्लास में दिया। प्रोफेसर्स जो भी पढ़ाते उसे गंभीरता से समझती। जबलपुर की रहने वाली शैलजा के पिता अशोक कुमार रिटायर्ड इंजीनियर और मम्मी अनिता तिवारी हाउसवाइफ हैं। शैलजा का प्लेसमेंट हो चुका है।

जीभर खेलने के बाद पढ़ता था

ओवरऑल बेस्ट परफॉर्मेंस के लिए गोल्ड मेडल हासिल करने वाले सिल्वेस्टर सैमुअल जे ने बताया कि मैंने पढ़ाई को कभी बोझ नहीं समझा। जीभरकर स्पोर्ट्स खेलता इसके बाद पढ़ने बैठता। पढ़ाई भी एंजॉय करता था। सिल्वेस्टर का एक कंपनी में प्लेसमेंट हो चुका है। उनके पिता जे दास और मां टी गुणासिल्वी रिटायर्ड टीचर हैं।

Dainik Bhasker, 26th April 2019,P.15